# मेल मिलाप एवं मनोरंजन संजोये मेला संस्कृति

**मीता उज्जैन***

आनंद जीवन का वह रस है जिसके बिना जीवन की संपूर्णता में कल्पना ही नहीं की जा सकती। आनंद के चरम को पाने के लिए हर व्यक्ति मनोरंजन के विभिन्न संसाधनों की खोज ही नही करता वरन् उसे आत्मसात् करने का भरपूर प्रयास भी करता है। कुल मिलाकर मनोरंजन मानव जीवन का वह अभिन्न अंग है जिसकी अनदेखी नही की जा सकती है।

ऐतिहासिक संदर्भो की बात करें तो हम पाएंगें कि मनुष्य अपने जीवन में आजीविका के साथ साथ मनोरंजन को भी प्राथमिकता देता आया है चाहे वो आखेट हो या नृत्य संगीत, चित्रकारी हो या लेखन लगभग हर सभ्यता में मनोरंजन या आमोद प्रमोद का अतिविशिष्ट स्थान रहा है या यह कहें कि यह हमारी परंपराओं में रच बस सा गया है। इन्हीं परंपराओं की अद्भुत देन है 'मेला'। आदिकाल से मेला और मनोरंजन एक दूसरे के पूरक रहे हैं और वैश्वीकरण के इस दौर में भी उतने ही प्रासंगिक है जितने की पुराने समय में थे। भारत को मेलों का देश भी कहा जा सकता। क्योंकि जितनी तरह की ऋतुएं, पर्व एवं त्योहार हैं, लगभग उतनी ही तरह के और उससे भी ज्यादा तरह के मेले, इस देश में आयोजित होते हैं, कई तो विदेशों में भी चर्चित हुए हैं और अपनी सांस्कतिक विशिष्टताओं के कारण देशी एवं विदेशी के पर्यटकों को लुभाने में भी सफल हुए हैं। चाहे वह हर वर्ष आने वाला माघ मेला हो या बारह वर्षो में होने वाला कुम्भ, विश्वविख्यात सोनपुर का पशु मेला हो या बेंगलूर का मूँगफली मेला, अजमेर का इस्लामिक उर्स मेला या सूरजकुंड, फरीदाबाद का हस्तशिल्प मेला, पुष्कर मेला या हिन्दू मुस्लिम सौहार्द का प्रतीक नौचंदी मेला या फिर देशी वेलेंटाइन डे के तर्ज पर भगोरिया मेला या लोक परंपरा से ओत प्रोत लोकरंग मेला। हर बड़े स्थानीय मेले में जन सैलाब उमड़ पड़ता हैं। यह एक खरीद फरोख्त, धार्मिक प्रयोजन, व्यापार का जरिया ही नही बल्कि परंपराओ, उल्लास एवं उमंग का समागम स्थल भी हैं।

मेले एवं उत्सव के उद्भव एवं विकास पर एक सरसरी निगाह डालें तो हम पाएंगें कि लगभग हर मेले की शुरुआत किसी न किसी तरह का धार्मिक प्रयोजन या उससे जुड़ी किवदंती से हुई है। जैसे की बहुप्रचलित माघ मेले से जुड़ी किवदंती के अनुसार माघ के धार्मिक अनुष्ठान के फलस्वरूप प्रतिष्ठानपुरी के नरेश पुरूरवा को अपनी कुरूपता से मुक्ति मिली थी। वहीं भृगु ऋषि के सुझाव पर व्याघ्रमुख वाले विद्याधर और गौतम ऋषि द्वारा अभिशप्त इंद्र को भी माघ स्नान के माहात्मय से ही श्राप से मुक्ति मिली थी। कई बार मेले सदियों से चली आ रही परंपराओं की एक कड़ी मात्र रह जाते हैं, जैसे की राजस्थान का लोकरंग एवं मध्यप्रदेश का भगोरिया मेला, जिसमें परंपरा के अनुसार बल प्रयोग के आधार पर वर-वधू का चयन किया जाता है तो वधू पर वर का अधिकार माना जाता है। ऐसी कई परम्पराएं एवं रीति रिवाज मेलों और त्योहारों के समय निभाये जाते हैं और यही विविधता मनोरंजन के नये आयाम गढ़ने में सहायक होती हैं।

अब मेले बदल रहे हैं। समय के साथ इनमें भव्यता एवं व्यापकता का समावेश हुआ है। यह पहले से ज्यादा विषयवस्तु आधारित हो गया हैं जैसे कि सिल्क मेला एवं हस्तशिल्प मेला, जहाँ पर देश के विभिन्न कोने से कारीगर उद्यमी एकत्रित होकर अपनी कला को प्रचारित ही नहीं करते बल्कि व्यापार के लिए अपनी संभावनाएं तलाशते हैं। विभिन्न तरह के मेलों के लोकव्यापीकरण में मीडिया ने अहम भूमिका निभाई है। आज इन मेलों की जानकारी समाचार पत्रों, स्थानीय टीव़ी चैनलों तक ही सीमित न रह कर इंटरनेट पर भी उपलब्ध है। जो मेलों को स्थानीय से लेकर अन्तरराष्ट्रीय मंच प्रदान करते है और लोक कलाकारों, उद्यमियों, पर्यटको और पूरे समाज को जोड़ने का सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं। मेले एवं उत्सव कस्बों से निकलकर शहर व राज्यों से निकलकर अन्तरराष्ट्रीय दर्जा पा चुके हैं। जैसे कि हाल ही में भोपाल में सम्पन्न लोकरंग मेला जिसका मुख्य आर्कषण देश विदेश से लाई गयीं कठपुतलियाँ थीं, जिनमें इण्डोनेशिया, वियतनाम, जापान, चीन एवं अन्य देशों की कठपुतलियों की दर्शकों ने खूब सराहना की। इस तरह की आयोजना

***व्याख्याता, जनसम्पर्क विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय**

उन कलाकारों को उचित स्थान दिला पाती है जो सदियों से लोक परंपरा या लोक माध्यम से जुड़े हुए हैं। आज नाचा,जात्रा, पण्डवानी, गरबा जैसे अनेक लोक माध्यम अपने राज्यों में सीमित न होकर विभिन्न राज्यों के लोगों का मन लुभा रहे हैं। सरल भाषा, उत्कृष्ट साज सज्जा, विविधता लोगों का भरपूर मनोरंजन करती है। इसी तरह के बदलाव खान पान में भी देखने को मिलते हैं, जहाँ विभिन्न राज्यों से लाए गये विभिन्न व्यंजनों से जनता रू-ब-रू ही नहीं होती है, एक तरह से कई जायकों का मजा एक जगह पर ही मिल जाता है जिसके किसी स्थानीय होटल या फूड प्वाइंट में मिलने की कम ही होती है।

बदलते दौर में मेलों की लोकप्रियता ने सरकारी एवं निजी क्षेत्र को भी आकर्षित किया है। आज मेलों का आयोजन दूरगामी उद्देश्य के लिए भी किया जाता और इसे बड़े प्रायोजक भी मिलते हैं, जैसे ग्वालियर का प्रसिद्ध मेला, रोजगार मेला, होम लोन मेला, नरेगा मेला जिसका ध्येय अपने ग्राहकों को जोड़ना और विकास योजनाओं के बारे में बताना ही नहीं रहता बल्कि मनोरंजन भी करना होता है। इस तरह के मेलों में हर तरह की जानकारी उपलब्ध कराई जाती हैं, जिसका जनता ज्यादा से ज्यादा उपयोग कर सके।

बदलते समय के साथ मनोरंजन की परिभाषा में कई तरह के बदलाव हुए है। मेला आज सम्प्रेषण का इतना सशक्त माध्यम बन गया है कि आधुनिक बाजार एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी मेला सँस्कृति को अपने एकीकृत विपणन संचार का एक महत्वपूर्ण उपकरण बना रही हैं। ऑटोमोबाइल क्षेत्र में लगने का दिल्ली का ऑटो एक्सपो, पराम्परागत मेलों का ही आधुनिक रूप है। आज भारत में विभिन्न हिस्से में 'प्रापर्टी फेयर' के नाम से आयोजन किये जाते हैं आधुनिक 'पुस्तक मेले', 'पुरानी कार के मेले', कृषि उपकरणों पर आधारित कृषि मेले, बैंकों की विभिन्न्न योजनाओं को समझाते मेले एवं निवेश मेले इसी विपणन संचार रणनीति का उदाहरण है। इसके अलावा राज्य सरकारें छोटे एवं लघु उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष मेलों में करों से छूट देती हैं। मध्यप्रदेश का 'ग्वालियर मेला' इस तरह एक प्रसिद्ध मेला है। ट्रेड फेयर इवेन्ट के नाम से ये मेल मिलाप, मनोरंजन मस्ती एवं सूचना के सशक्त और आधुनिक माध्यम बनकर उभर रहे हैं।

आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति अपनी आय, रुचि और परिस्थिति के हिसाब से मनोरंजन के संसाधनों पर अपना समय और पैसा व्यय करता है। चाहे वह शानदार मॉल में जाये या इंटरनेट खंगालें या आउटडोर और इनडोर खेलों में रुचि ले। वह अपने तनाव को कम करने के लिए मनोरंजन को महत्व देता है। मेले एवं उत्सव आज के बदलते दौर में भी अपने पैर क्यों जमाये हुए हैं? तो इसका सीधा जवाब है कि यह समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, और शायद यही ठोस वजह है कि भारत सरकार एवं अन्य राज्य सरकारें मेलों व उत्सव में चाक चौबंद प्रशासनिक रुचि और निगरानी रखती हैं। इसी का नतीजा है कि हाल में हुए संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित लोकरंग मेला सिर्फ मध्यप्रदेश में ही बल्कि तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक में धूम मचा चुका है। इस तरह के मेले विभिन्न तरह के परंपराओं को जानने, समझने के मौका देते हैं।

कई बार बदलाव कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक बातें भी साथ ले आते हैं, मेलों व उत्सवों ने अपनी प्रसांगिकता बनाये रखने के लिए जहाँ एक ओर नयी तकनीक का सहारा लिया है वहीं दूसरी ओर बढ़ती व्यावसायिकता के कारण इसमें अश्लीलता भी आई है। हाजीपुर बिहार का प्रसिद्ध सोनपुर पशु मेला विश्वविख्यात है। पिछले दिनों लड़कियों के अश्लील नृत्य के लिए भी चर्चा में आया है और इस तरह के कितने कस्बाई मेले इस व्यावसायिकता की चपेट में हर साल आते हैं। यदि इस नकारात्मक पक्ष को दरकिनार किया जाए तो आज भी मेले हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और उसे जनमानस तक पहुँचाने का कार्य बखूबी निभा रहे हैं।

उदारीकरण के इस दौर में मेला आज संचार नहीं संवाद स्थापित करने में नये माध्यमों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली हैं और आज भी आधुनिकता को धत्ता बताते हुए मनोरंजन का परचम लहरा रहा है।

*कोई भी जो शिक्षा और मनोरंजन के बीच अंतर करना चाहता है,*
*पर यह नहीं जानता की दूसरे के पहले किसे रखे।*

**मार्शल मैक्लूहॉन**